शास्त्री-III

ग्रहाणां निशोदयास्तज्ञानप्रकारः —

खेचरोऽर्कास्तकाले सषड्भार्कतो
योऽधिकोऽल्पोऽर्कतो निश्युदेतीह सः।
अस्तमेत्यन्यथाथो विधेयः क्रमात्-
पूर्वपश्चात्स्वदृक्कर्मभाक्स ग्रहः॥

अन्वयः— अर्कास्तकाले यः खेचरः सषड्भार्कतः अधिकः अर्कतः अल्पः सः इह निशि उदेति, अन्यथा अस्तम्, अथो सः ग्रहः क्रमात् पूर्व-पश्चात्स्वदृक्कर्मभाक् विधेयः।

तारा- अर्कास्तकाले सूर्यास्तसमये, यः खेचरः ग्रहः, सषड्भार्कतोऽधिकः, वा यः केवलात् अर्कतः सूर्यतः अल्पः, सः इह निशि रात्रौ उदेति। अन्यथा अस्तम् एति। अथो सः ग्रहः क्रमात् पूर्व-पश्चात् स्वदृक्कर्मभाग् विधेयः।

भावार्थः— सायंकाल के समय स्पष्टसूर्य तथा अभीष्ट ग्रह का स्पष्ट साधन करें। यदि वह स्पष्टग्रह ६ राशि को जोड़ देने पर स्पष्टसूर्य से अधिक हो अथवा स्पष्टसूर्य से कम हो तो उस ग्रह का रात्रि में उदय होता है। यदि उक्त स्पष्टग्रह षड्राशियुक्त सूर्य से कम और स्पष्टसूर्य से अधिक हो तो उस ग्रह का रात्रि में अस्त होता है। और यदि उस ग्रह का रात्रि में उदय हो, तो ~~और~~ उसको पूर्वदृक्कर्मदत्त करें। पूर्वदृक्कर्मदत्त की रीति इस प्रकार है — इसके पहले जो दृक्कर्मदत्त पूर्वोदयास्त साधन की रीति कही गयी है, उससे साधित उत्तर को पूर्वदृक्कर्मदत्त कहते हैं। यदि रात्री में उस ग्रह का अस्त हो तो उसके लिये पश्चिमदृक्कर्मदत्त विधि का प्रयोग करें। पश्चिमदृक्कर्मदत्त की रीति इस प्रकार है— इसके पहले जो दृक्कर्मदत्तग्रह के पश्चिमोदयास्त साधन की रीति कही गयी है, उससे साधित उत्तर को पश्चिमदृक्कर्मदत्त कहते हैं।

ग्रहलाघवम्

उदयास्ताधिकारः शास्त्री-III

Date 04.12.20
Page 1

अगस्त्योदयास्तकालसाधनम् :—

पलभाष्टवधोनसंयुता गजशैला वसुखेचरा लवाः।
इह तावति भास्करे क्रमाद्घटजोऽस्तं ह्युदयं च गच्छति ॥

अन्वयः— गजशैलाः वसुखेचराः लवाः पलभाष्ट-वधोनसंयुताः, तावति भास्करे, इह क्रमात् घटजः हिउदयम् अस्तं च गच्छति।

तारा - गजशैलाः ७८, वसुखेचराः ९८, लवाः, क्रमेण पलभाष्टवधोनसंयुताः कार्याः। तावति तत्समाने, भास्करे सूर्ये, घटजः, अगस्त्यः, 'अगस्त्यः कुम्भसम्भवः' इत्यमरः। क्रमात् उदयम् अस्तं च गच्छति।

भावार्थः— पलभा को ८ से गुणा करें। जो अंशादि गुणनफल हो उसको गजशैलाः ७८ अंशों में से घटाएं। जितना शेष रहे उतने ही अंशो पर जिस समय सूर्य आयेगा, उस समय अगस्त्य का उदय होगा और उस अंशादि गुणनफल को ९८ अंशों में जोड़ देने पर जो योगफल मिलेगा, उतने ही अंशों पर जिस समय सूर्य आयेगा, उसी समय अगस्त्य का उदय होगा।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

शास्त्री-III

ग्रहाणाम् उदयास्तकालयोर्गतघटिकाज्ञानप्रकार :—

उद्गमे यातकालः खगात्त्वस्तके
षड्भयुक्तात्सषड्भार्कभोग्यान्वितः।
भुक्तमध्योदयोऽस्योद्गमास्ते भवेद्-
रात्रियातोऽथ तत्कालखेटात्स्फुटः॥

अन्वयः— उद्गमे खगात् यातकालः, अस्तके तु षड्भयुक्तात्, सषड्भार्कभोग्यान्वितः भुक्तमध्योदयः अस्य उद्गमास्ते रात्रियातः भवेत्, अथ तत्कालखेटात् स्फुटः।

तारा— उद्गमे ग्रहोदये सति, खगात् ग्रहात्, यातकालः गतसमयः, साध्यः, अस्तके तु ग्रहस्यास्तङ्गते तु, षड्भयुक्तात् खगात्, यातकालः साध्यः, सषड्भार्कभोग्यान्वितः, भुक्तमध्योदयः कार्यः, तदा अस्य ग्रहस्य, उद्गमास्ते रात्रियातो भवेत्। अथ अनन्तरं, तत्कालखेटात् स्फुटः कालः स्यात्।

भावार्थः— यदि अभीष्ट ग्रह के उदयकाल का साधन करना हो, तो दृक्कर्मदत्त ग्रह को लग्न मानकर उससे भुक्तकाल का साधन करें। यदि अस्तकाल का साधन करना हो, तो षड्राशियुक्त-दृक्कर्मदत्त ग्रह को लग्न मानकर उससे भुक्तकाल का साधन करें और षड्राशियुक्त सूर्य से भोग्यकाल का साधन करें।

तदनन्तर भुक्त और भोग्यकाल के योग में लग्न तथा सूर्य के मध्य के पलात्मक उदयों के योग को जोड़ें। जो योगफल प्राप्त हो, उतनी घटी-पल पर रात्रि में ग्रह का उदय अथवा अस्त होगा। इसके बाद उदयास्तकालिक दृक्कर्मदत्तग्रह और सूर्य को तात्कालिक स्पष्ट करके इनसे पूर्वोक्त रीति द्वारा पुनः उदयास्तकाल की घटिकाओं का साधन करने से तब वह अभीष्ट ग्रह का उदयास्तकाल होता है।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।